

# KHAN G.S. RESEARCH CENTRE

Kisan Cold Storage, Sai Mandir, Musallahpur Hatt, Patna-6

Mob. : 8877918018, 8757354880

By : Khan Sir

(मानचित्र विशेषज्ञ)

## INDIAN GEOGRAPHY

### प्रायद्वीपीय पठार

❖ यह 1300 - 1600 करोड़ वर्ष पुराना है।

❖ भारत पहले मकर रेखा पर था।

यह एक साल में 5 सेमी. खिसकता है। धीरे-धीरे भारत खिसकता गया और जाकर टेथिस सागर से टकरा गया और वह हिमालय का निर्माण हुआ। जब वह टकराए तो वहाँ गढ़वा हो गया। हिमालय से बहुत सी नदियाँ निकली और जितना कंकड़ पत्थर लाई वह उस गढ़वे में भरती गई।

❖ मैदानों का निर्माण :-

जब भारत अरब सागरीय प्लेट से टकराया तो भयंकर भूचाल आया और इतना ज्वालामुखी फुटा की कई लाख सालों पर ज्वालामुखी फुटते रहा और लावा की कई परत बिछ गई जिसे ट्रैफ कहते हैं और वह लावा की परते इतनी मजबूत हो गई की वो बैसाल्ट बन गया। इससे वह इतनी मजबूत हो गई कि इसके अंदर भूकम्प आता है तो यह नीचे ही दम तोड़ देता है। इसी कारण दक्षिण भारत में भूकम्प का एहसास नहीं होता है। इससे सबसे ज्यादा लावा महाराष्ट्र के पास निकलते थे। इसका मतलब जब यह टकरा रहा था तो इससे पहले ही यह (प्रायद्वीपीय पठार) तीनों से था।

क्या इस पर पेड़-पौधे नहीं होंगे ? क्या इस पर जानवर नहीं होंगे। यहाँ के सब जानवर और पेड़-पौधे दक्कन ट्रैप के नीचे दब कर मर गए लेकिन झारखण्ड, उड़ीसा, छत्तीसगढ़ में उतना मात्रा में लावा नहीं गिरा है। जितना वहाँ पर गिरा था।

लावा की सबसे मोटी परत महाराष्ट्र में देखी जाएगी। इसीलिए महाराष्ट्र में खोदना कठिन है लेकिन झारखण्ड, छत्तीसगढ़ उड़ीसा में खोदना आसान है। इसी कारण यह लोग खनन करके कोयला निकलते हैं। महाराष्ट्र में भी खनिज होगी लेकिन वहाँ खनन करना बहुत ही कठिन है।

कुछ ज्वालामुखी समुद्र में भी गिरा होगा और वहाँ जो मछली, कछुआ तैर रही होगी। वो सब वहाँ दब कर मर गई होगी और वही आगे चलकर पेट्रोलियम बनेगी होगी।

इसी कारण जब अरब सागर को खनन करेंगे तो वहाँ से भी पेट्रोलियम अवश्य ही निकला होगा। इसीलिए अरब सागर में एक जगह बम्बे हाई, भारत में सबसे अधिक पेट्रोलियम बम्बे हाई से निकलता है। इसका मतलब जैसे जमीन महाराष्ट्र की होगी वैसी ही जमीन अरब सागर के नीचे का होगा।

जब वहाँ विस्फोट हो रहा था तो वहाँ के आस-पास के क्षेत्र ऊंचे होते गये और उसके अगल-बगल के क्षेत्र की ऊंचाई कम होती गई। इसी तरह ऊंचाई कम होना और समुद्र में जाके मिल जाना ही घाट कहलाता है। इसलिए इसे पश्चिमी घाट कहते हैं। उत्तर के दक्षिण की ओर तुलना करें तो दक्षिण का भाग ऊँचा है।

## ■ प्रायद्वीपीय पठार :-

भारत का प्रायद्वीपीय पठार एक अनियमित त्रिभुजाकार आकृति वाला भूखंड है, जिसका विस्तार उत्तर-पश्चिम में अरावली पर्वतमाला व दिल्ली, पूर्व में राजमहल की पहाड़ियों, पश्चिम में गिर पहाड़ियों, दक्षिण में इलायची (कार्डमम) पहाड़ियों तथा उत्तर-पूर्व में शिलांग एवं कार्बाएंगलोंग पठार तक है। इसकी औसत ऊंचाई 600 - 900 मीटर है। **यह गोंडवानालैंड के टूटने एवं उसके उत्तर दिशा में प्रवाह के कारण बना था।** अतः यह प्राचीनतम भू-भाग **पैजिया** का एक हिस्सा है, जो पुराने क्रिस्टलीय, आग्नेय तथा रूपांतरित शैलों से बना है सामान्यतः प्रायद्वीप की ऊंचाई पश्चिम से पूर्व की ओर कम होती चली जाती है, यही कारण है कि प्रायद्वीपीय पठार की अधिकांश का बहाव पश्चिम से पूर्व की ओर होता है। **प्रायद्वीपीय पठार का ढाल उत्तर और पूर्व की ओर है**, जो सोन, चंबल और दामोदर नदियों के प्रवाह से स्पष्ट है। दक्षिणी भाग में इसका ढाल पश्चिम से पूर्व की ओर है जो गादावरी, कृष्णा, महानदी, कावेरी नदियों के प्रवाह से स्पष्ट है। प्रायद्वीपीय नदियों में नर्मदा एवं ताप्ती नदियाँ अपवाद हैं, क्योंकि इनके बहने की दिशा पूर्व से पश्चिम की ओर होती है। ऐसा भ्रंश घाटी से होकर बहने के कारण है।

प्रायद्वीपीय पठार को **‘पठारों का पठार’** कहते हैं, क्योंकि यह अनेक पठारों से मिलकर बना है।

★ केन्द्रीय उच्च भूमि, पूर्वी पठार

★ उत्तर-पूर्वी पठार, दक्कन का पठार

■ गुजरात की प्रमुख पहाड़ियाँ (उत्तर से दक्षिण के क्रम में) इस प्रकार हैं-

1. कच्छ पहाड़ी
2. मांडव पहाड़ी
3. बारदा पहाड़ी
4. गिरनार पहाड़ी
5. गिर पहाड़ी

■ केन्द्रीय उच्च भूमि :-

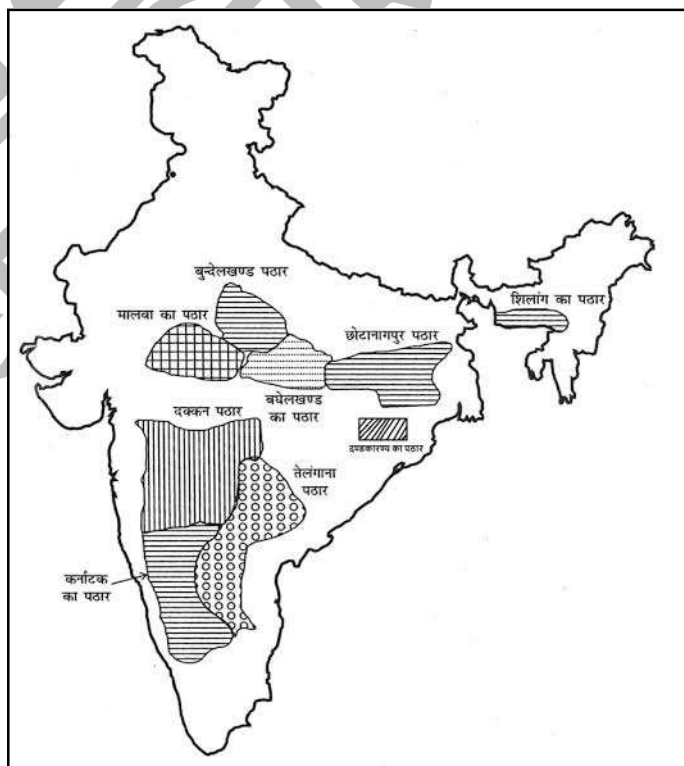
केन्द्रीय उच्च भूमि के अंतर्गत निम्नलिखित क्षेत्रों को शामिल किया जाता है-

1. अरावली पर्वत श्रेणी
2. मेंवाड का पठार
3. मालवा का पठार
4. विध्यन श्रेणी
5. बुंदेलखंड का पठार
6. सतपुड़ा श्रेणी

■ अरावली पर्वत श्रेणी :-

★ अरावली पर्वत का विस्तार उत्तर-पूर्व में दिल्ली रिज से लेकर दक्षिण-पश्चिम में गुजरात के पालनपुर तक लगभग 800 किमी है।

★ यह प्राचीनतम मोड़दार **‘अवशिष्ट पर्वत’** (Residual Mountain) का उदाहरण है जो राजस्थान बांगर को केन्द्रीय उच्च भूमि से अलग करने वाली संरचना है। इसकी उत्पत्ति ग्री-कैम्ब्रियन काल में हुई थी। अरावली की अनुमानित आयु **570 मिलियन वर्ष** मानी जाती है।



- ★ अरावली संरचना पश्चिमी भारत का मुख्य 'जल विभाजक' है जो रास्थान मैदान के अपवाह क्षेत्र को गंगा के मैदान के अपवाह क्षेत्र से अलग करती है।
- ★ लूनी नदी इस पर्वत से निकलने वाली राजस्थान मैदान की सर्वाधिक महत्वपूर्ण नदी है जो राजस्थान बांगर और थार मरुस्थल से होते हुए गुजरात के कच्छ के रण में विलीन हो जाती है, इसलिए यह एक अतः स्थलीय अपवाह तंत्र का उदाहरण है।
- ★ अरावली से निकलने वाली सुकरी और जवाई नदियाँ लूनी नदी की। अरावली से निकलने वाला सुकरा आर. ज. महत्वपूर्ण नदियाँ हैं।
- ★ अरावली पर्वतमाला पश्चिमी भारत की एक मुख्य जलवायु विभाजक भी हैं जो पूरब के अपेक्षाकृत अधिक वर्षा वाले क्षेत्र को पश्चिम के अर्द्ध शुष्क और शुष्क प्रवेश से अलग करती है।
- ★ उत्तर-पश्चिम भारत में यह क्षेत्र खनिज संसाधनों, जैसे-तांबा, सीसा, जस्ता, अभ्रक तथा चूना पत्थर के भंडार की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण है।
- ★ अरावली पर्वत का सर्वोच्च शिखर 'गुरु शिखर' है, जो आबू पहाड़ी पर स्थित है। इसी आबू पहाड़ी में 'जैनियों' का प्रसिद्ध धर्मस्थल 'दिलवाड़ा जैन मंदिर' स्थित है जबकि अन्य शिखर 'कुंभलगढ़' है।
- **मेवाड़ का पठार**
- ★ मेवाड़ के पठार का विस्तार **राजस्थान व मध्य प्रदेश** में है। मेवाड़ माधव पठार का विस्तार राजस्थान व मध्य पठार, अरावली पर्वत को मालवा के पठार से अलग करने वाली संरचना है।
- ★ यह अरावली पर्वत से निकलने वाली बनारस नदी के अपवाह क्षेत्र में आता है। **बनास नदी चंबल नदी की एक महत्वपूर्ण सहायक नदी है।**
- **मालवा का पठार**
- ★ मध्य प्रदेश में बेसाल्ट चट्टान से निर्मित संरचना को '**मालवा का पठार**' कहते हैं। मालवा पठार को राजस्थान में 'हाड़ौती का पठार' कहते हैं। इसका विस्तार दक्षिण में विंध्यन संरचना, उत्तर में ग्वालियर पहाड़ी क्षेत्र, पूर्व में बुंदेलखण्ड व बघेलखंड तथा पश्चिम में मेवाड़ पठारी क्षेत्र तक है।
- ★ यहाँ बेसाल्ट चट्टान में अपक्षरण के कारण काली मृदा का विकास हुआ है, इसलिए मालवा पठारी क्षेत्र कपास की कृषि के लिये उपयोगी है।
- ★ **चंबल, नर्मदा व तापी** यहाँ की प्रमुख नदियाँ हैं। चंबल नदी घाटी भारत में अवनालिका अपरदन से सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्र है, जिसे '**बीहड़ या उत्खात भूमि**' कहते हैं।
- **बुंदेलखण्ड का पठार**
- ★ इसका विस्तार ग्वालियर के पठार और विंध्याचल श्रेणी के बीच मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश राज्यों में है।
- ★ इसके अंतर्गत उत्तर प्रदेश के सात जिले (जालौन, झाँसी, ललितपुर, चित्रकूट, हमीरपुर, बाँदा, महोबा) तथा मध्य प्रदेश के सात जिले (दतिया, टीकमगढ़, छत्तरपुर, पन्ना, दमोह, सागर, विदिशा) आते हैं।
- ★ यहाँ की ग्रेनाइट व नीस चट्टानी संरचना में अपक्षय व अपरदन की क्रिया होने के कारण लाल मृदा का विकास हुआ है।
- ★ बुंदेलखण्ड के पठार में यमुना की सहायक चंबल नदी के द्वारा बने महाखण्डों को '**उत्खात भूमि का प्रदेश**' कहते हैं।
- ★ **बुंदेलखंड क्षेत्र सूखा प्रभावित क्षेत्र होने के कारण केन्द्रीय उच्च भूमि का आर्थिक दृष्टि से एक पिछड़ा क्षेत्र है।**
- ★ मध्य प्रदेश तथा छत्तीसगढ़ की सीमा पर स्थित बघेलखंड का पठार केन्द्रीय उच्च भूमि को पूर्वी पठार से अलग करता है।

## ❖ विंध्यन श्रेणी :-

- ★ इसका विस्तार गुजरात से लेकर मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार तथा छत्तीसगढ़ तक है। इसे गुजरात में 'जोबट हिल' और बिहार में 'कैमूर हिल' कहते हैं।
- ★ विंध्यन श्रेणी के दक्षिण में नर्मदा नदी घाटी है, जो विंध्यन पर्वत को सतपुड़ा पर्वत से अलग करती है।
- ★ विंध्यन श्रेणी, कई पहाड़ियों की एक पर्वत श्रेणी है, जिसमें विंध्याचल, कैमूर तथा पारसनाथ की पहाड़ियाँ पाई जाती हैं।
- ★ लाल बलुआ पत्थर और चूना पत्थर के चट्टान से निर्मित इस संरचना में धात्विक खनिज संसाधनों का अभाव है, परन्तु भवन निर्माण के पदार्थों के भंडार की दृष्टि से इसका आर्थिक महत्व सबसे अधिक है।
- ★ यह पर्वत श्रेणी उत्तरी भारत और प्रायद्वीपीय भारत की मुख्य जल विभाजक भी है क्योंकि यह गंगा नदी के अपवाह क्षेत्र को प्रायद्वीपीय भारत के अपवाह क्षेत्र से अलग करती है।

## ★ सतपुड़ा श्रेणी : -

- ★ यह भारत के मध्य भाग में स्थित है, जिसका विस्तार गुजरात से होते हुए मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र की सीमा से लेकर छत्तीसगढ़ एवं छोटानागपुर के पठार तक है।
- ★ यह पश्चिम से पूर्व राजपीपला की पहाड़ी, महादेव पहाड़ी एवं मैकाल श्रेणी के रूप में फैली हुई है। इस पर्वत श्रेणी की सर्वोच्च चोटी 'धूपगढ़' (1,350 मी.) है जो महादेव पर्वत पर स्थित है। मैकाल श्रेणी की सर्वोच्च चोटी 'अमरकंटक' (1,065 मी.) है, (कुछ अन्य स्रोतों में इसकी कई अन्य ऊँचाइयाँ दी गई हैं)। यहाँ से नर्मदा व सोन नदी का उद्गम हुआ है।
- ★ यह एक ब्लॉक पर्वत है, जिसका निर्माण मुख्यतः ग्रेनाइट एवं बेसाल्ट चट्टानों से हुआ है। यह पर्वत श्रेणी नर्मदा और तापी नदियों के बीच जलविभाजक का कार्य करती है।

## ❖ पूर्वी पठार

छोटानागपुर का पठार

छत्तीसगढ़ बेसिन / महानदी बेसिन

दंडकारण्य का पठार

## ❖ छोटानागपुर का पठार : -

- ★ इसका विस्तार मुख्यतः झारखण्ड में है। इसके अलावा, दक्षिणी बिहार, उत्तरी छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल का पुरुलिया जिला और ओडिशा का उत्तरी क्षेत्र भी छोटानागपुर पठारी क्षेत्र में आते हैं।
- ★ इस पठार के उत्तर-पूर्व में राजमहल पहाड़ी, उत्तर में हजारीबाग का पठार तथा दक्षिण में राँच का पठार है। इन तीनों संरचनाओं को संयुक्त रूप से छोटानागपुर पठार क्षेत्र में शामिल किया जाता है।
- ★ **दामोदर नदी**, राँची के पठार को हजारीबाग के पठार से अलग करती है। यह छोटानागपुर के पठार की सबसे बड़ी नदी है।
- ★ दामोदर नदी बेसिन कायेला भंडार की दृष्टि से भारत का सर्वाधिक महत्वपूर्ण क्षेत्र है।
- ★ हजारीबाग पठार की चोटी '**पारसनाथ हिल**' छोटानागपुर पठार की सबसे ऊँची चोटी है। यह **जैनियों का प्रसिद्ध तीर्थ सील** हैं।
- ★ राँची पठार से निकलने वाली स्वर्ण रेखा नदी, छोटानागपुर की दूसरी सबसे बड़ी नदी है। राँची के समीप इस नदी पर '**हुडरु जलप्रपात**' है।
- ★ छोटानागपुर पठारी क्षेत्र में ग्रेनाइट चट्टान से निर्मित उच्च स्थलाकृति। या द्वीप रूपीय स्थलाकृति को '**पाट भूमि**' कहते हैं। भूगर्भिक संरचना की दृष्टि से सट क्षेत्र एक '**उत्थित भूखण्ड**' उदाहरण हैं।

## ❖ छत्तीसगढ़ बेसिन / महानदी बेसिन

- ★ छत्तीसगढ़ बेसिन का विस्तार छत्तीसगढ़ एवं ओडिशा राज्यों में है, जिसका निर्माण अवतलन की प्रक्रिया द्वारा हुआ है।
- ★ छत्तीसगढ़ बेसिन, छोटानागपुर के राँची पठार को दण्डकारण्य पठार से अलग करता है तथा स्वयं महानदी के द्वारा छोटानागपुर पठार के राँची पठार से अलग होता है।
- ★ यहाँ पर महानदी तथा उसकी सहायक नदियाँ-महानदी के द्वारा छोटानागपुर पठार के राँची पठार से अलग होता है।
- ★ यहाँ पर महानदी तथा उसकी सहायक नदियाँ-शिवनाथ, हसदो, मांड, ईब आदि प्रवाहित होती हैं।
- ★ छत्तीसगढ़ बेसिन में गोंडवाना क्रम की संरचना पाई जाती है, जिसके कारण ही यहाँ कोयला भंडार की प्रचुर उपलब्धता है।

## ❖ दंडकारण्य का पठार

- ★ इसका विस्तार ओडिशा, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना तक है। अतः यह भारत के मध्यवर्ती भाग में स्थित है।
- ★ यह अत्यंत ही ऊबड़-खाबड़ एवं अनुपजाऊ क्षेत्र है, लेकिन खनिज संसाधनों के भंडार की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।
- ★ गोदावरी की सहायक नदी 'इंद्रावती' का उद्गम इसी क्षेत्र से होता है।
- ★ भारत में 'टिन धातु' दंडकारण्य पठार में स्थित बस्तर क्षेत्र में पाई जाती है।

## उत्तर-पूर्वी पठार

### ❖ मेघालय का पठार :-

- ★ उत्पत्ति एवं संरचना की दृष्टि से मेघालय का पठार, प्रायद्वीपीय पठार (छोटानागपुर का पठार) का ही पूर्वी विस्तार है, जो 'राजमहल-गारो गैप' अथवा 'मालदा गैप' के द्वारा अलग हुआ है।
- ★ इस पठार में पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः गारो, खासी, जयंतिया तथा मिकिर आदि पहाड़ियाँ अवस्थित हैं, जो प्राचीन चट्टानों से बनी हैं।
- ★ गारो, खासी, जयंतिया इस पठार में निवास करने वाली प्रमुख जनजातियाँ हैं।
- ★ खासी पर्वतीय क्षेत्र का 'कीप' रूपी स्वरूप में अवस्थित होने के कारण ही यहाँ औसत से अधिक वर्षा होती है। यही कारण है कि यहाँ खासी पहाड़ी के दक्षिण में स्थित 'मॉसिनराम' एवं 'चेरापूंजी' विश्व में सर्वाधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में गिने जाते हैं।
- ★ यहाँ धारवाड़ संरचना से निर्मित 'शिलॉन्ग रेंज' सबसे ऊँचा पर्वतीय क्षेत्र है, इसलिए इसे 'शिलॉन्ग के पठार' के नाम से भी जाना जाता है। इस क्षेत्र की सबसे ऊँची चोटी 'नॉकरेक' (मेघालय में अवस्थित) है।
- ★ औसत से अधिक वर्षा होने के कारण ही यहाँ 'लैटेराइट मिट्टी' तथा सदाबहार वनों का विकास हुआ है।

### ❖ मालदा गैप या राजमहल - गारो गैप

- ★ इसकी उत्पत्ति 'प्रायद्वीपीय भारत के संचलन के दौरान धंवास की प्रक्रिया' कारण हुई है।
- ★ इसके द्वारा छोटानागपुर का राजमहल पर्वत, मेघालय के गारो पर्वत से अलग होता है, इसलिये इसे 'राजमहल-गारो गैप' कहते हैं, जबकि पश्चिम बंगाल में इसे 'मालदा गैप' कहते हैं।
- ★ गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों के द्वारा लाए गए अवसादों का मालदा / राजमहल गैप में निक्षेपण से डेल्टाई मैदान का निर्माण हुआ है।
- ★ इस डेल्टाई मैदान में 'पीट मृदा' की उपलब्धता के कारण ही 'मैग्रोव वनस्पत' का विकास हुआ है। इस क्षेत्र में पाया जाने वाला 'सुंदरवन' भारत के सर्वाधिक जैव विधिता वाले क्षेत्रों में से एक है।



## दक्कन का पठार

इस पठार का विस्तार तापी नदी के दक्षिण में त्रिभुजाकार रूप में हैं-

- ★ इसके अंतर्गत निम्नलिखित क्षेत्रों को सम्मिलित किया जाता है-

- **दक्कन ट्रैप**

- **कर्नाटक का पठार**

- **आंध्र का पठार**

- **दक्कन ट्रैप**

- ★ महाराष्ट्र में बेसाल्ट चट्टान से निर्मित संरचना होने के कारण यहाँ 'काली मिट्टी' का विकास हुआ है इसलिये यह क्षेत्र कपास के उत्पादन की दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

- ★ इसका विस्तार  $16^\circ$  उत्तरी अक्षांश के उत्तर से लेकर उत्तर-पूर्व में नागपुर तक है।

- ★ इस पठारी क्षेत्र से गोदावरी नदी अपवाहित होती है।

- ★ सतमाला, अजंता, बालाघाट और हरिश्चंद्र इत्यादि पहाड़ियों का विस्तार भी इसी पठारी क्षेत्र में है।

- **कर्नाटक का पठार**

- ★ कर्नाटक के पठारी क्षेत्र में पश्चिमी घाट से संलग्न पर्वतीय एवं पठारी क्षेत्र को '**मलनाड**' कहते हैं। '**बाबा बूदान**' यहाँ का सबसे ऊँचा पर्वतीय क्षेत्र है तथा '**मुल्लयानगिरी**' (मुलनगिरी) इसकी सबसे ऊँची चोटी है। (ऑक्सफोर्ड एटलस में कुद्रेमुख को बाबा बूदान की सबसे ऊँची चोटी दर्शाया गया है।)

- ★ मलनाड से संलग्न पूर्व में अपेक्षाकृत कम ऊँचे पठारी क्षेत्र को '**मैदान**' कहते हैं, जिसमें औसत से अधिक ऊँचे मैदानी क्षेत्र को '**बंगलूरु का पठार**' एवं '**मैसूर का पठार**' के नाम से जाना जाता है।

- ★ कर्नाटक में धारवाड़ संरचना का विकास होने के कारण पठारी क्षेत्र धात्विक खनिज संसाधनों के भंडार की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

- ★ यहाँ लौह अयस्क का सर्वाधिक भंडार है, जिसके लिये बाबा बूदान पर्वतीय क्षेत्र अधिक महत्वपूर्ण है।

- ★ मैसूर के पठार में ही कावेरी नदी का अपवाह क्षेत्र है।

- ★ कृष्णा, कावेरी, तुंगभद्रा, शरावती व भीमा यहाँ की प्रमुख नदियाँ हैं। शरावती नदी पर भारत का महत्वपूर्ण जलप्रपात है, जिसे '**योग या गरसोप्पा**' जलप्रपात कहते हैं। इसे '**महात्मा गाँधी**' जलप्रपात भी कहते हैं।

- ★ कुंचीकल जलप्रपात भारत का सबसे ऊँचा जलप्रपात (455 मीटर) है, जो कि शिमोगा जिले (कर्नाटक) में '**वाराही नदी**' पर है। (वर्तमान स्रोतों के आधार पर)।

- **आंध्र का पठार**

- ★ आंध्र के पठार के अंतर्गत रायलसीमा का पठार तथा तेलंगाना के पठार को शामिल किया जाता है।

- ★ कृष्णा नदी बेसिन के दक्षिण के पठारी क्षेत्र को रायलसीमा का पठार कहते हैं, जहाँ वेलीकोंडा, पालकोंडा और नल्लामलाई पर्वतों का विस्तार है, जबकि कृष्णा नदी बेसिन के उत्तर में स्थित पठारी क्षेत्र को **तेलंगाना का पठार** कहते हैं।

- ★ तेलंगाना के पठार का ऊपरी हिस्सा पठारी है तथा दक्षिणी हिस्सा उपजाऊ मैदान है।

- ★ कृष्णा और गोदावरी नदी बेसिन के मध्य में '**कोल्लेरु झील**' अवस्थित है, जो एशिया की सबसे बड़ी दलदली भूमि है।

- **दक्षिणी पर्वतीय :-**

- ★ दक्षिणी पर्वतीय क्षेत्र के अंतर्गत केरल एवं तमिलनाडु की सीमा पर स्थित नीलगिरी, अन्नामलाई, कार्डमम तथा तमिलनाडु में स्थित पालनी पहाड़ियाँ आदि आती हैं।

- ★ डोडाबेटा, नीलगिरी पर्वत की सबसे ऊँची चोटी है, जबकि माकुर्ती (Makurti) इसकी दूसरी सबसे ऊँची चोटी है। प्रसिद्ध पर्यटन स्थल 'उडगमंडलम या ऊटी' नीलगिरी में ही अवस्थित है।
- ★ अन्नामलाई पर्वत की चोटी 'अनाईमुडी' (2,695 मी.) दक्षिण भारत की सबसे ऊँची चोटी है, जबकि कार्डमम, प्रायद्वीपीय भारत का दक्षिणतम पर्वतीय क्षेत्र है एवं यह केरल व तमिलनाडु की सीमाओं पर स्थित है।
- ★ नीलगिरी और अन्नमलाई के बीच 'पालघाट दर्रा' स्थित है, जो पल्लकड़ को कोयंबटूर से जोड़ता है, जबकि अन्नामलाई और कार्डमम के बीच 'सेनकोटा दर्रा' अवस्थित है, जो 'तिरुवनपुरम को 'मदुरै' से जोड़ता है। प्रसिद्ध पर्यटन स्थल 'कोडाईकनाल' पालनी पहाड़ियों में ही स्थित है।
- ★ केरल के नीलगिरी पर्वतीय क्षेत्र में स्थित शांत घाटी (Silent Valley) सर्वाधिक जैव विविधता वाले क्षेत्रों में से एक है।

#### पर्वत

#### अवस्थिति

|                 |                        |
|-----------------|------------------------|
| नीलगिरी पर्वत   | केरल-तमिलनाडु          |
| अन्नमलाई पर्वत  | केरल-तमिलनाडु          |
| कार्डमम पर्वत   | केरल-तमिलनाडु          |
| पालनी पर्वत     | तमिलनाडु               |
| शेवरॉय पर्वत    | तमिलनाडु               |
| जवादी पर्वत     | तमिलनाडु               |
| पालकोंडा पर्वत  | आंध्रप्रदेश            |
| वेलीकोंडा पर्वत | आंध्रप्रदेश            |
| नल्लामलाई पर्वत | आंध्र प्रदेश, तेलंगाना |

#### पश्चिमी घाट

- ★ पश्चिमी घाट का विस्तार अरब सागर तट के समांतर लगभग 1,600 किमी. की लम्बाई में है।
- ★ पश्चिमी घाट को 'सहाद्रि' भी कहा जाता है, इस क्षेत्र की औसत ऊँचाई लगभग 1,000-1,300 मीटर है। महाबलेश्वर, कलसूबाई, हरिश्चन्द्र आदि यहाँ की प्रमुख चोटियाँ हैं।
- ★ यह उत्तर में तापी नदी के मुहाने (महाराष्ट्र-गुजरात की सीमा) से गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, केरल तथा तमिलनाडु के। कन्याकुमारी अंतरीप तक फैला हुआ है।
- ★ यह वास्तविक पर्वत श्रेणी नहीं है। इसका निर्माण प्रायद्वीपीय भारत के गोंडवानालैंड के विभंजन से निर्मित कगार तथा स्थल के एक खण्ड के अरब सागर में अवसंवलन के कारण हुआ है। इसका पश्चिमी ढाल तीव्र एवं खड़ा है जबकि पूर्वी ढाल मंद एवं सीढ़ीनुमा है।
- ★ महाबलेश्वर के पास ही गोदावरी, भीमा और कृष्णा आदि नदियों का उद्गम स्थान है। यहाँ की नदियाँ अपने मुहाने पर ज्वारनदमुख (एश्चुअरी) का निर्माण करती हैं।
- ★ पश्चिमी घाट पर्वतीय शृंखला को विश्व में सर्वाधिक सम्पन्न जैव विविधता वाली श्रेणी में रखा जाता है। यूनेस्को ने 2012 में इस क्षेत्र को 'विश्व धरोहर स्थल' घोषित किया था।

## प्रारूढ़ीपीय भारत के प्रमुख दर्रे

|               |            |   |
|---------------|------------|---|
| थाल घाट दर्रा | महाराष्ट्र | मुम्बई-नासिक  |
| भोघाट दर्रा   | महाराष्ट्र | मुम्बई-पुणे   |
| पाल घाट दर्रा | केरल       | पलक्कड़-कोयंबटूर (नीलगिरी और अन्नामलाई पहाड़ियों के मध्य) |
| सेनकोटा गैप   | केरल       | तिरुवनंतपुरम्-मदुरै                                       |

### पश्चिमी घाट की प्रमुख पहाड़ियों का क्रम (उत्तर से दक्षिण)

- नीलगिरी पहाड़ी
- अन्नामलाई पहाड़ी
- इलाइची पहाड़ी (कार्डमम पहाड़ी)

#### पूर्वी घाट :-

- ★ भारत का पूर्वी घाट एक असतत् शृंखला के रूप में ओडिशा से लेकर तमिलनाडु तक विस्तृत है।
- ★ गोदावरी, कृष्णा, कोवरी, महानदी तथा पलार आदि बड़ी नदियों द्वारा विच्छेदित होकर एवं अत्यधिक अपरदन के कारण पूर्वी घाट की औसत ऊँचाई पश्चिमी घाट की अपेक्षा कम (लगभग 1,100 मी.) है।
- ★ पूर्वी घाट के मध्य भाग में दो समानांतर पहाड़ियाँ पाई जाती हैं, जिनमें से पूर्वी पहाड़ियों को वेलीकोंडा श्रेणी और पश्चिमी पहाड़ियों को पालकोंडा श्रेणी जाता है।
- ★ पूर्वी घाट में कँटीले शिखर, तीव्र ढाल सहित अत्यधिक विषम एवं उबड़-खाबड़ पहाड़ी क्षेत्रों का निर्माण हुआ है जिसे जवादी, शेवरॉय आदि पहाड़ियों के रूप में देखा जा सकता है जो अंत में नीलगिरी में मिल जाते हैं।

### पूर्वी घाट के प्रमुख पहाड़ियों का क्रम (उत्तर से दक्षिण)

- नल्लामलाई पहाड़ी
- वेलीकोंडा पहाड़ी
- पालकोंडा पहाड़ी
- नगारी पहाड़ी
- जवादी पहाड़ी
- शेवरॉय पहाड़ी
- पंचमलाई पहाड़ी
- सिरुमलाई पहाड़ी

आंध्र प्रदेश

तमिलनाडु

#### तटीय मैदान :-

भारत के तटीय मैदान का विस्तार प्रायद्वीपीय पर्वत श्रेणी (पूर्वी एवं पश्चिमी घाट) तथा समुद्र तट के मध्य हुआ है। इनका निर्माण सागरीय तरंगों द्वारा अपरदन व निक्षेपण तथा पठारी नदियों द्वारा लाए गए अवसादों के जमाव से हुआ है।

- ★ भारत के तटीय मैदान को मुख्यतः दो भागों में बाँटा जाता है-

1. पश्चिमी तटीय मैदान
2. पूर्वी तटीय मैदान



## ❖ पश्चिमी तटीय मैदान

- ★ पश्चिमी घाट तथा अरब सागर के तट के बीच निर्मित मैदान को पश्चिमी तटीय मैदान कहते हैं। इसका विस्तार गुजरात के सूरत से तमिलनाडु के कन्याकुमारी तक है।

## ❖ पश्चिमी तटीय मैदान को पुनः चार वर्गों में बाँटा जाता है-

- ★ गुजरात का मैदान या तट-गुजरात का तटवर्ती क्षेत्र (इसके कच्छ और काठियावाड़ या सौराष्ट्र का तटीय मैदान भी कहते हैं।
- ★ कोंकण का मैदान तट-दमन (महाराष्ट्र) से गोवा के बीच।
- ★ कन्नड का मैदान या तट-गोवा से मंगलूरु के बीच।
- ★ मालाबार का मैदान या तट-मंगलूरु एवं कन्याकुमारी (केप कॉमोरिन) के बीच।
- ★ भारत का पश्चिमी तटीय मैदान गुजरात में सबसे चौड़ा है और दक्षिण की ओर जाने पर इसकी चौड़ाई कम होती जाती है लेकिन केरल में यह पुनः चौड़ा हो जाता है।
- ★ कोंकण के तटीय मैदान पर साल, सागवान आदि के वनों की अधिकता है।
- ★ कन्नड के तटीय मैदान का निर्माण प्राचीन रूपांतरित चट्टानों से हुआ है, जिस पर गरम मसालों, सुपारी, नारियल आदि की कृषि की जाती है।
- ★ मालाबार के तटीय मैदान में कयाल (लैगून) पाए जाते हैं, जिनका प्रयोग मछली पकड़ने, अर्द्धशीय जल परिवहन के साथ-साथ पर्यटन स्थलों के रूप में किया जाता है।
- ★ केरल के पुन्नामदा कयाल में प्रतिवर्ष 'नेहरू ट्रॉफी वल्लमकाली (नौका दौड़) प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है।
- ★ पश्चिमी तटीय मैदान जलमग्न तटीय मैदानों के उदाहरण हैं और यह अधिक कटा-फटा होने के कारण पत्तनों एवं बंदरगाहों के विकास के लिये प्राकृतिक परिस्थितियाँ प्रदान करते हैं।
- ★ पश्चिमी तटीय मैदान जलमग्न तटीय मैदानों के उदाहरण हैं और यह अधिक कटा-फटा होने के कारण पत्तनों एवं बंदरगाहों के विकास के लिये प्राकृतिक परिस्थितियाँ प्रदान करते हैं।

## ❖ पूर्वी तटीय मैदान : -

- ★ पूर्वी घाट तथा बंगाल की खाड़ी के तट के बीच निर्मित मैदान को 'पूर्वी तटीय मैदान' कहते हैं। इसका विस्तार स्वर्ण रेखा नदी से लेकर कन्याकुमारी तक है।
- ★ पूर्वी तटीय मैदान या घाट को तीन भागों में बाँटा जाता है-
  1. उत्कल तट-स्वर्ण रेखा नदी से महानदी के बीच (ओडिशा)
  2. उत्तरी सरकार तट- महानदी से कृष्णा नदी के बीच (ओडिशा एवं आंध्रप्रदेश)
  3. कोरोमंडल तट-कृष्णा नदी से कन्याकुमारी के बीच (आंध्र प्रदेश एवं तमिलनाडु)
- ★ पूर्वी तटीय मैदान को दक्षिण-पश्चिम मानसून और उत्तर-पूर्वी मानसून, दोनों मानसूनों से वर्षा की प्राप्ति होती है।
- ★ इस क्षेत्र में चिकनी मिट्टी की प्रधानता के कारण चावल की खेती अधिक की जाती है।
- ★ पूर्वी तटीय मैदान में गोदावरी व कृष्णा नदियों के डेल्टा में कोल्लेरू झील स्थित है।
- ★ चिल्का व पुलिकट लैगून झीलें भी पूर्वी तटीय मैदान की नदियाँ अपने मुहाने पर एश्चुअरी न बनाकर डेल्टा का निर्माण करती हैं।
- ★ पूर्वी तटीय मैदान पर उत्तर से दक्षिण स्थित प्रमुख डेल्टा निम्नलिखित हैं-
  - महानदी डेल्टा - ओडिशा
  - गोदावरी डेल्टा - आंध्र प्रदेश

- कृष्णा डेल्टा - आंध्र प्रदेश
- कावेरी डेल्टा - तमिलनाडु

## भारत के द्वीप समूह

- भारत के द्वीप समूह को मुख्यतः दो भागों में बाँटा जा सकता है पहला बंगाल की खाड़ी में स्थित 'अंडमान और निकोबार द्वीप समूह' तथा अरब सागर में स्थित 'लक्षद्वीप समूह' तथा दूसरे अन्य द्वीप समूह जो निम्न हैं-

### प्रमुख द्वीप तथा द्वीप समूह

#### द्वीप समूह

अंडमान एवं निकोबार

लक्षद्वीप

#### अन्य द्वीप

श्रीहरिकोटा

पंबन द्वीप

न्यू मूर द्वीप

अब्दुल कलाम द्वीप (व्हीलर द्वीप)

माजुली द्वीप (नदी द्वीप)

### ★ अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह

- 'अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह' बंगाल की खाड़ी में अवस्थित है। यह लगभग 572 छोटे-बड़े द्वीपों से मिलकर बना है।
- मुख्यतः ये द्वीप समुद्र में जलमग्न पर्वतों के भाग हैं। कुछ द्वीपों की उत्पत्ति ज्वालामुखी क्रिया से भी जुड़ी है।
- 10° उत्तरी अक्षांश (10° चैनल) अंडमान द्वीप को निकोबार द्वीप से अलग करता है।

#### अंडमान निम्नलिखित द्वीपों का समूह है-

उत्तरी अंडमान

मध्य अंडमान

दक्षिणी अंडमान

लिटिल अंडमान

इस द्वीप समूह की मुख्य पर्वत चोटियों में सैडल चोटी (उत्तरी अंडमान-लगभग 738 मीटर), माउंट डियोवोली (मध्य अंडमान 515 मीटर), माउंट कोयोब (दक्षिणी अंडमान-लगभग 460 मीटर) और माउंट थुईल्लर (ग्रेट निकोबार 642 मीटर) शामिल हैं।

- अंडमान एवं निकोबार की राजधानी 'पोर्ट ब्लेयर' है जो दक्षिणी अंडमान द्वीप पर स्थित है। यहीं पर प्रसिद्ध 'कोको स्ट्रेट, अंडमान (उत्तरी अंडमान) के उत्तर में स्थित है, जो अंडमान को म्यांमार के 'कोको द्वीप समूह' से अलग करती है।
- दक्षिणी अंडमान एवं लिटिल अंडमान के बीच 'डंकन पास' पाया जाता है।
- मध्य अंडमान के पूर्व में 'बैरन द्वीप' स्थित है जो भारत का एकमात्र सक्रिय ज्वालामुखी है, जबकि उत्तरी अंडमान के पूर्व में स्थित 'नारकोंडम' एक सुबुप्त ज्वालामुखी द्वीप है।
- निकोबार भी कई द्वीपों का समूह है, जैसे-

कार निकोबार

लिटिल निकोबार

ग्रेट निकोबार

- 6 डिग्री चैनल ग्रेट निकोबार को 'सुमात्रा' से अलग करता है।
- ग्रेट निकोबार द्वीप भौगोलिक रूप से इंडोनेशिया के सुमात्रा द्वीप के सबसे निकट अवस्थित भारतीय क्षेत्र हैं।
- भारत का दक्षिणतम बिंदु 'इंदिरा पॉइंट' है, जो ग्रेट निकोबार के दक्षिण में स्थित है। (2004 की सुनामी के कारण यह जल में डूब गया है)।
- इंदिरा पॉइंट का अन्य नाम 'पिगमेलियन पॉइंट' है।
- अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह की सर्वोच्च चोटी 'सैडल पीक' है, जो उत्तरी अंडमान में स्थित है तथा 'माउंट थूलियर', अंडमान एवं निकोबार की दूसरी सबसे ऊँची पर्वत चोटी है जो 'ग्रेट निकोबार द्वीप' पर स्थित है।
- यहाँ 'जारवा' शॉम्पेन आदि प्रमुख जनजातियों के लोग आज भी अपने आदिम स्थिति में जीवनयापन करते हैं।
- वर्ष 2014 के 16वीं लोकसभा चुनाव में पहली बार शॉम्पेन जनजाति ने मतदान किया।

### ★ लक्षद्वीप समूह

- लक्षद्वीप अरब सागर में प्रवाल भित्तियों द्वारा निर्मित द्वीप समूह है। यहाँ द्वीपों की कुल संख्या 36 है जबकि इनमें से केवल 10 ही आबाद हैं।
- 'कवारत्ती', लक्षद्वीप की राजधानी है जो 9 डिग्री चैनल के उत्तर में स्थित है।
- '9 डिग्री चैनल', मिनिक्कॉय को लक्षद्वीप के अन्य द्वीपों (मुख्य लक्षद्वीप) से अलग करता है।
- 'मिनिक्कॉय' (अन्य स्रोतों में एंड्रोट), लक्षद्वीप का सबसे बड़ा द्वीप है।
- '8 डिग्री चैनल', लक्षद्वीप (मिनिक्कॉय) को मालदीव से अलग करता है।

### ★ अन्य द्वीप

#### श्रीहरिकोटा

- यह आंध्रप्रदेश के तट पर अवस्थित द्वीप है।
- इसी द्वीप पर भारत का एकमात्र उपग्रह प्रक्षेपण केन्द्र 'सतीश धवन अंतरिक्ष केन्द्र' स्थित है।
- श्री हरिकोटा, पुलिकट झील को बंगाल की खाड़ी से अलग करता है।
- पुलिकट झील आंध्र प्रदेश एवं तमिलनाडु राज्य की सीमाओं पर स्थित है।

### ★ पंबन द्वीप

- यह 'आदम ब्रिज' अथवा 'राम सेतु' का ही भाग है तथा भारत एवं श्रीलंका के बीच स्थित है। पंबन द्वीप पर ही 'रामेश्वरम्' स्थित है।
- यह मन्नार की खाड़ी में अवस्थित है।

### ★ न्यू मूर द्वीप

- यह बंगाल की खाड़ी में भारत एवं बांग्लादेश की सीमा पर अवस्थित है, जिसके कारण इस पर अधिकार को लेकर दोनों देशों के बीच उठे विवाद के चलते इसे दोनों देशों के बीच बाँट दिया गया है।
- भारत के हिस्से में आए इस द्वीप का अधिकांश भाग जलमग्न अवस्था में है।
- अब्दुल कलाम द्वीप (व्हीलर द्वीप)
- यह ओडिशा के सागर तट से परे और राजधानी भुवनेश्वर से लगभग 150 किमी. की दूरी पर स्थित एक द्वीप है।
- इसका पुराना नाम व्हीलर द्वीप था।
- इसका प्रयोग भारत अपने प्रक्षेपास्त्र कार्यक्रम के परीक्षण केंद्र के रूप में करता है।

## ★ माजुली द्वीप

- माजुली द्वीप दुनिया का सबसे बड़ा नदी द्वीप है, जो असम में ब्रह्मपुत्र नदी के मध्य में बसा है। यह अपनी जैव विविधता के लिये प्रसिद्ध है।
- यहाँ की जनसंख्या साधन है।
- हाल ही में माजुली को असम का 35वाँ जिला घोषित किया गया है। इसके साथ ही यह देश का पहला द्वीपीय जिला बन गया है।

## ★ अन्य सम्बंधित तथ्य

- कच्छ की खाड़ी अलग करती है-कच्छ तथा काठियावाड़ प्रायद्वीप को।
- खंभात की खाड़ी अलग करती है-काठियावाड़ प्रायद्वीप को गुजरात की मुख्य भूमि से।
- नर्मदा तथा तापी नदियों के मुहाने पर अवस्थित द्वीप क्रमशः अलियाबेट तथा खदियाबेट।
- वेलिंगटन द्वीप, कोच्चि शहर (केरल) का भाग है।
- भारत का 'शीत मरुस्थल' लद्दाख को कहा जाता है।
- पश्चिमी घाट की सबसे ऊँची चोटी-अनाईमुडी (2,695 मीटर)
- दक्षिण भारत की सबसे ऊँची चोटी-अनाईमुडी
- पूर्वी घाट की सबसे ऊँची चोटी-महेंद्रगिरी (ओडिशा) कुछ अन्य स्रोतों में जिन्दगढ़ा (आंध्र प्रदेश) भी मिलता है।
- गढ़जात की पहाड़ियाँ ओडिशा में स्थित है।
- महाराष्ट्र की सबसे ऊँची चोटी-कलसूबाई।
- भारत के हिमालयी राज्य हैं-जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, नागालैंड, मणिपुर, त्रिपुरा, असम एवं पश्चिम बंगाल।

## भारतीय मरुस्थल

- 25 सेमी. वार्षिक वर्षा या उससे कम वर्षा वाले क्षेत्र को मरुस्थल की श्रेणी में रखा जाता है।
- भारत में अरावली पहाड़ियों के उत्तर-पश्चिम तथा पश्चिमी किनारे पर बालू के टिब्बों से ढंका एक तरंगित मरुस्थलीय मैदान है, जिसे 'थार का मरुस्थल' कहा जाता है।
- थार के मरुस्थल का अधिकांश भाग राजस्थान में स्थित है परंतु कुछ भाग पंजाब, हरियाणा एवं गुजरात प्रांत में भी फैला हुआ है।
- विश्व के मरुस्थलीय क्षेत्रों में सर्वाधिक जन घनत्व थार के मरुस्थल में ही पाया जाता है।
- ढाल के आधार पर थार के मरुस्थल को मुख्यतः दो भागों में बाँटा जा ढाल के आध सकता है-
  - (1) उत्तरी भाग, जिसका ढाल पाकिस्तान के सिंध प्रांत की ओर है।
  - (2) दक्षिणी भाग, जिसका ढाल कच्छ के रन की ओर है।
- कच्छ के रन को 'सफेद मरुस्थल' भी कहा जाता है। यह क्षेत्र नमकीन दलदल से निर्मित है जो हजारों वर्ग किमी. क्षेत्र में फैला हुआ है।
- इस क्षेत्र की अधिकांश नदियों में केवल वर्षा के मौसम में ही जल पाया जाता है। अधिकांश नदियाँ अंतः स्थलीय प्रवाह प्रतिरूप का उदाहरण है।
- लूनी इस क्षेत्र का प्रमुख नदी है।
- इस क्षेत्र की भू-गर्भिक चट्टानी संरचना, प्रायद्वीपीय पठार का ही विस्तार है किंतु यहाँ की धरातलीय स्थलाकृतियाँ भौतिक अपक्षय एवं पवनों द्वारा निर्मित होती हैं, जैसे-रेत के टीले, बरखान, छत्रक आदि।